International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 24-08-2023, Accepted: 11-09-2023, Published: 27-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 28-29

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं की भूमिकाः एक अध्ययन

डॉ० संगीता
Government College for women, Sampla, Haryana, India

सारांश
19वीं सदी का उत्तरार्द्ध वह समय था, जब समाज के सभी समूहों ने अपने आप को एक भारतीय राष्ट्र का हिस्सा मानकर स्वराज की प्राप्ति के लिए संघर्ष किया। हालांकि उससे पहले भी ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध काफी विद्रोह सामने आए थे, परंतु 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक ऐसा मील का पत्थर साबित हुई जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को मजबूत मंच प्रदान किया। गांधी जैसे नेता की अगुवाई ने स्वतंत्रता संघर्ष को सभी वर्गो व जातियों के लिए एक सार्वजनिक कृत्य बना दिया। आजादी की लड़ाई के विभिन्न चरणों जैसे स्वदेशी आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका में रही है। इन चरणों में विभिन्न समुदायों और वर्गों की महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया। उन्होंने न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन को संख्यात्मक दृष्टि से मजबूत बनाया, बल्कि उसमें महिलाओं से संबंधित विभिन्न मुद्दों और प्रश्न भी साथ लेकर आई। महिलाओं के राजनीतिकरण की यह प्रक्रिया इतनी सहजता से हुई कि उन्हें पुरूष सरंक्षकों की भी सराहना प्राप्त हुई। जिस प्रकार पूजा में शक्ति का आह्वान किया जाता है और स्त्री शक्ति का प्रतीक मानी गई है इसलिए महिलाओं को शक्ति का रूप मानकर राष्ट्रीय आंदोलन में शमिल किया गया।

मूल शब्दः स्वराज, सार्वजनिक कृत्य, भागीदारी, राजनीतिकरण, शक्ति।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और महिला भागीदारी का स्वरूप

सविनय अवज्ञा आन्दोलन से राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का एक नया चरण शुरू हुआ। 1930 के इस आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों ही दृष्टियों से 1920 के दशक की शुरूआत की भागीदारी से भिन्न थी। 12 मार्च, 1930 को अहमदाबाद से दांड़ी तक 240 मील की दांडी यात्रा से सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ हुआ। यह आंदोलन अंग्रेजों के नमक कानून को तोड़ने, उनके नमक बनाने के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए चलाया गया था। महिलाएं इस यात्रा में हिस्सा लेना चाहती थी, लेकिन गांधी ने यह कहकर मना कर दिया कि इससे अंग्रेज सोचेंगे कि भारतीय कायर है और खुद के बजाय महिलाओं को आगे कर रहे हैं। परंतु बाद में, महिलाओं को इसमें औपचारिक रूप से शामिल कर लिया गया। नमक सत्याग्रह में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला सरोजिनी नायडू थी। दांडी पहुँचकर गांधी ने महिलाओं का एक सम्मेलन बुलाया और वहां उन्होंने महिलाओं के लिए आंदोलन के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई, जिसमें महिलाओं को अपने लिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने थे जो उनके स्वभाव के अनुकुल हो। उन्हें खासकर विदेशी कपड़ों और शराबों की दुकानों का बहिष्कार करना था। दांडी यात्रा के बाद महिलाओं को स्वाधीनता आंदोलन में पूरी तरह सम्मिलित कर लिया गया। हजारों महिलाओं ने नमक सत्याग्रह आंदोलन में नमक बनाने से लेकर बेचने तक के काम किए। 1930 के दशक में, महिलाओं को पहली बार पुलिस दमन का भी सामना करना पड़ा। महिलाओं के जुलुसों पर भी लाठीचार्ज किया गया तथा कई बार पुलिस ने उन्हें काफी बेरहमी से मारा। इस प्रकार की घटनाओं से जनता में काफी आक्रोश फैला तथा आंदोलन में और तेजी आई। इस दौरान जेल भेजी जाने वाली महिलाओं की संख्या तेजी से बढ़ी। शहरी और ग्रामीण दोनों ही महिलाओं ने 1932–33 में भारी संख्या में गिरफ्तारी दी। इस पूरे आंदोलन में बहुत बड़ी संख्या में महिलाओं ने पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाते हुए काम किया और भारी कष्ट उठाए। भारी लाठी चार्ज के बीच नेली सेनगुप्त ने अपना अध्यक्षीय भाषण पढ़ा और फिर गिरफ्तार हो गई। दिल्ली में अरूणा आसफ अली नेतृत्व करते हुए दूसरी बार गिरफ्तारी हुई और भारी जुर्माने के साथ उनके कीमती सामान की भी जब्ती कर ली गई। 1930 के नमक सत्याग्रह में स्त्रियों की इस सक्रियता का एक लाभ यह हुआ कि अब महिला संगठनों पर उच्चवर्गीय स्त्रियों का प्रभाव समाप्त हो गया था।

महिला भागीदारी का प्रभाव

भारतीय राष्ट्रवाद के दौरान स्त्रियों को सार्वजनिक क्षेत्र में जो भागीदारी दी गई थी, वह वही पुराने पितृसत्तात्मक ढांचे और लैंगिक विषमताओं के अंतर्गत ही थी उनकी भूमिका की शुरूआत शक्ति की देवी दुर्गा के रूप में स्त्रियों को राष्ट्रवाद के साथ जोड़ने से हुई थी और जहाँ पर भी स्त्रियों ने इस भूमिका से अलग हटकर परंपरागत छवि को बदलने की कोशिश की उन पर न केवल पाबंदिया लगाई गई, बल्कि उनकी निंदा भी की गई। फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि इन सीमाओं के बावजूद धीरे–धीरे भारतीय स्त्रियों ने अपनी भूमिका को विस्तार दिया और परंपरागत भूमिका को भी नहीं तोड़ा। अब भारतीय नारीवाद के अंतर्गत लैंगिक संबंधों की परंपरागत सीमाओं और विचारधाराओं को चुनौती दी जा रही थी। इन्हीं वर्षों के दौरान भारतीय महिला आंदोलन ने राष्ट्रवाद के साथ साथ स्त्री प्रश्न पर भी आवाज उठाना शुरू कर दिया था और समानता की मांग ने भी जोर पकड़ा। 1910–1920 ऐसा दशक था जिसमें सर्वप्रथम महिला संगठनों के गठन के प्रयास किए गए। सन 1917 ई० में ऐनी बेसेंट, मालती पटवर्धन, अम्मू स्वामीनाथन ने मिलकर बीमेन इंडियन एसोसिएशन ;ॅप।द्ध की स्थापना की। इससे भारतीय नारीवाद की जागरूक एकता उभरी। सारे देश में महिला संगठनों की संख्या में वृद्धि हुई। 1927 ई० में स्थापित तीसरा अखिल भारतीय संगठन आल इंडिया वीमेन कांफ्रेंस ;ॅप्ब्द्ध महिला मुद्दों के प्रतिनिधित्व देने में अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाने में सफल रहा। 1930 के दशक तक ये महिला संगठन एक प्रभुत्वशाली शक्ति के रूप में उभरे, जो हर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे पर जवाब दे रहे थे। महिला संगठनों ने महिला समानता के लिए जिस मुद्दे को सबसे सक्रियता के साथ उठाया वह महिला

मताधिकार का मुद्दा था। 1935 के भारत सरकार अधिनियम ने मतदाता स्त्रियों का अनुपात बढ़ाकर 1:5 कर दिया और विधायिकाओं में उनके लिए सीटे भी आरक्षित की। स्त्रियों की यह सक्रियता 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सबसे अधिक स्पष्ट रूप से नजर आई। इस समय आंदोलन में ग्रामीण स्त्रियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और अपने देश के स्वतंत्र कराने में स्वयं आगे आई।

निष्कर्ष

इस प्रकार जब हम राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को देखते हैं तो वह उनकी घरेलू भूमिका का विस्तार मात्र ही लगती है। इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं को एक नई पितृसत्ता के नीचे रहने को मान्यता मिली। राष्ट्रवादियों ने महिलाओं की भूमिका और सीमांए पहले ही तय कर दी थी और महिलाओं को उन्हें लांघने की अनुमति नहीं थी। स्वाधीनता आंदोलन को एक धार्मिक प्रक्रिया और सांस्कृतिक लड़ाई माना गया। जिसमें आंदोलन की परंपरावादी जड़ों के कारण महिलाएँ आंदोलन में सहभागी तो बनी, परंतु अपने निजी और सार्वजनिक जीवन में परंपरा से हटकर कुछ नहीं कर सकी। यहीं कारण था कि 1940 में जब देश के स्वाधीन होने के आसार दिखने लगे तो महिला आंदोलन पूरी तरह से स्वाधीनता आंदोलन में समाहित हो गया और यह इतनी सहजता से हुआ कि सबको लगा कि महिलाओं की मुक्ति संबंधी सभी मुद्दों का हल देश में स्वतंत्रता है। वास्तव में, राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का कहीं कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था जिसके कारण स्वतंत्रता के बाद महिला आंदोलन में ठहराव आ गया और वह 1970 के दशक तक संगठित तरीके से आगे नहीं बढ़ सका।

संदर्भ सूची

1. Manmohan Kaur, Role of Women in the Freedom Movement 1885-1947, Sterling Publishers, Delhi, 1968, 97.
2. Madhu, Kishwar, “Gandhi on Women”, Economic and Political Weekly,1985:20(40):1691-702.
3. Samita Sen, “Towards a Feminist Politics? The Indian Women’s Movement in Historical Perspective”, Policy Research Report on Gender and Development, Working Paper Series No. 9. The World Bank Development Research Group, 2000, 17.
4. Abhinaya Gaikwad, “Dalit Women’s Participation in India’s Freedom Struggle” in Women in India’s Freedom Struggle (ed.) Nawaz B. Mody, Allieds Publishers Ltd., Bombay, 2000, 282-284.
5. Jayawardena Kumari, Feminism and Nationalism in the third World, Zed Books Ltd., London and New Jersey, 1986, 108.